श्री राम चंद्र मिशन
केवल निजी वितरण के लिए
ECHOES
INDIA
सितम्बर २०१३ खंड ६, अंक ५

मणपाक्कम के समाचार

जून २०१३

गुरुदेव 'ब्रह्मांड" और 'कान्हा' परियोजनाओं के भूमि विवरण में बहुत रुचि ले रहे थे जिसके परिणाम स्वरूप इन प्रयत्नों में एक नयी उर्जा आती दिखायी दी । गुरुदेव डार्म 'ए' में आए और यह कहते हुए एक वार्ता दी, "मैं भी आप सबकी तरह जमीन का एक मालिक हूँ और मैं भी यह चाहता हूँ कि हमारे लाभ के लिए यह सब सुलझ जाए।"

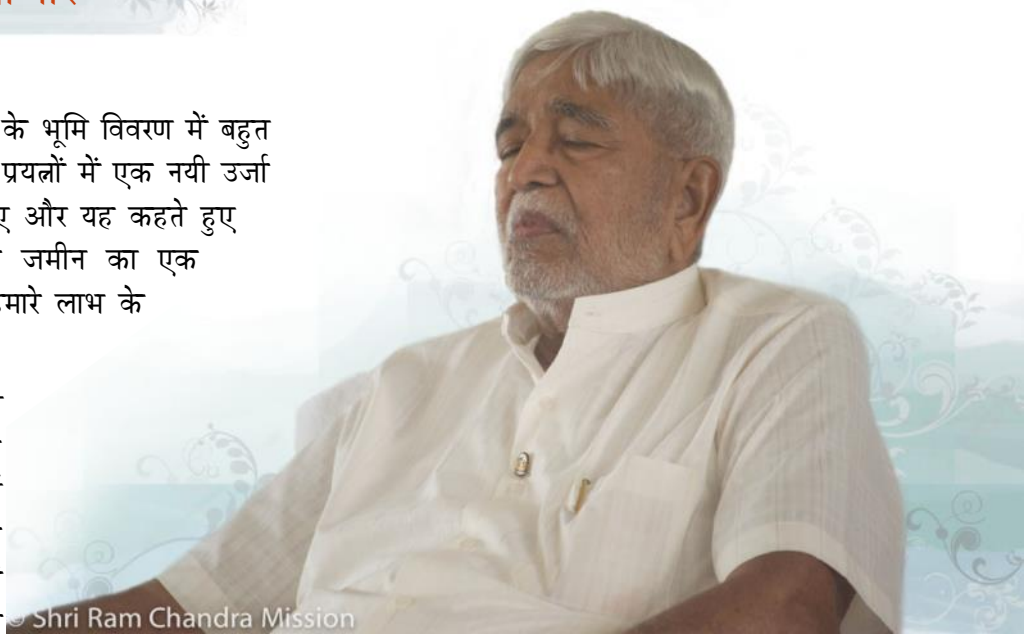

गुरुदेव ने भाई कमलेश पटेल को बाबूजी की कृतियों में से कुछ पुस्तकें दीं। उन्होंने अपनी मौलिक डायरी का संग्रह भी भाई कमलेश पटेल को दिया जिन्होंने कहा कि यह एक खजाने जैसा है और भविष्य में सबके लिए बहुत लाभप्रद होगा। गुरुदेव ने कहा, "मैने कभी नहीं सोचा कि यह किसी के लिए लाभप्रद होगा। मैं इसे अपने व्यक्तिगत कारणों से नियमित जानकारी रखने के लिए लिखता था।" गुरुदेव के पास १९६४ से १९९४ तक की हस्त-लिखित डायरी है और उसके पश्चात १९९५ से वे इसे सीधे कम्प्युटर पर टाइप कर रहे हैं।

गुरुदेव ने एक घटना के बारे मे बताया जब एक सुबह ५ बजे के लगभग वे गायत्री में बाबूजी के शयन कक्ष के बाहर बैठे थे और डायरी लिख रहे थे। अचानक बाबूजी बाहर आए और उसे देखने के लिए कहा। गुरुदेव ने अपनी डायरी उनको दिखायी और बाबूजी ने कहा, "अरे, तुम तो वह सब लिख रहे हो जो मैंने कहा है। तुम कैसे ये सब बातें याद रखते हो जबकि मुझे खुद याद नहीं रहता?" गुरुदेव ने कहा, "मैं बस अपने आपको उस तारीख़ पर लाता हूँ और सब बातें मेरे सामने आ जाती हैं ।" बाबूजी यह सुनकर बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा, "इसी को शोध कहते हैं।"

गुरुदेव ने बताया कि कैसे बाबूजी उनसे पूछते थे कि तुम जैसे ही लेटते हो तुरन्त कैसे सो जाते हो। गुरुदेव ने कहा, "मैं केवल कल्पना करता हूँ कि नींद मेरे मस्तक के सामने से मेरी आँखों में उतर रही है और मैं सो जाता हूँ।" बाबूजी ने उत्तर दिया,"देखो, शोध का अर्थ पोथियाँ और सिद्धान्त लिखना नहीं है, यह मौलिक शोध है।"

गुरुदेव ने कहा, "ज़्यादातर कार्य मैंने तब सीखा, जब मैं बाबूजी के साथ यात्रा करता था। वे मुझे कार्य करने के लिए कहते थे और वे निरीक्षण करते थे। कई बार वे मुझे अपने साथ बैठने के लिए कहते थे और अपने साथ प्राणाहुति देने का कार्य करवाते थे। मेरी इच्छा थी कि मैं उनके साथ और दस वर्षों तक रहता। बाबूजी ने मुझे बताया था कि वे मेरे पास और मेरे साथ २००६ या २००७ तक रहेंगे लेकिन वे बहुत वर्षों पहले ही चले गए।

जुलाई २०१३

कुछ महिनों पहले गुरुदेव इन्टरनेट पर 'मैनी लाइव्ज, मैनी मास्टर्स' नामक पुस्तक के लेखक ब्रायन वीज़ द्वारा संचालित 'रिग्रेशन सेशन' देख रहे थे। ब्रायन वीज़ ने 'मिरेकल्स हैप्पन' शीर्षक की एक नयी पुस्तक लिखी है और गुरुदेव ने इस पुस्तक को पढ़ना शुरु किया है। यह पुस्तक उन व्यक्तियों के बारे में है जो 'रिग्रेशन ट्रीटमेन्ट' के द्वारा अपने पिछले जीवन में जाते हैं। यह विचार व्यक्त किया गया है कि हम सब एक हैं और बहुत से उदाहरणों से पता चलता है कि कैसे इस जन्म में हमारी मुलाकातें और साहचर्य संयोगवश नहीं हैं अपितु ये सम्बन्ध पिछले कई जन्मों की निरन्तरता है।

गुरुदेव एक समय पर दो-तीन किताबें रखते हैं और प्रत्येक पढ़ाई सत्र के लिए वे इनमें से एक किताब ले लेते हैं। सप्ताहान्त में ओमेगा स्कूल के कुछ छात्र उनके लिए तेज आवाज़ में किताबें पढ़ने के लिए आते हैं। जब वे पढ़ने वाले को सुनते हैं तो उनकी आँखें बन्द होती हैं और वे जो पढ़ा जा रहा है, उस पर एकाग्रचित होते हैं। वे बीच-बीच में पढ़ने वाले की त्रुटियों के सुधार में भी सहायता करते हैं।

सिंगापुर आध्यात्मिक केन्द्र का उद्घाटन

बुधवार ३ जुलाई २०१३

मालिक ने कहा ,"हम सिंगापुर में इस ध्यान केन्द्र का इन्तज़ार काफ़ी समय से कर रहे थे।" वे बहुत सवेरे से ही तैयार हो गये व सिंगापुर के अभ्यासियों से विडियो-लिन्क द्वारा जुड़ने के लिये पूरी तरह तैयार थे। सिंगापुर के अभ्यासियों को पहले से यह सलाह दी गई थी कि वे ध्यान मे बैठ जाएं तथा मालिक बाद में शामिल हो जाएंगे। जैसे ही सिंगापुर के ध्यान केन्द्र में सत्संग समाप्त हुआ मालिक उत्सुक्ता के साथ अपने ऑफिस कक्ष में पधारे। उन्होंने सिंगापुर के सभी अभ्यासियों को बधाई दी व बाद में एक सुन्दर वार्ता दी, जिसमें उन्होंने बच्चों की एक कविता, "ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार" का उल्लेख किया व कहा, "तुम्हें जानना चाहिये कि हीरा प्रकाश को बाहर से परावर्तित नहीं करता बल्कि उसमें पूर्ण आन्तरिक परावर्तन होता है। हीरे के अन्दर का प्रकाश, बिना बाहर निकले पूर्णत: आन्तरिक परिवर्तित हो जाता है। इसलिये हीरा इतना चमकदार, इतना सुन्दर व अद्भुत होता है।.. .. हमें चाहिये कि हृदय के प्रकाश जिस पर की हम ध्यान करते हैं, को हम बढ़ावें व उसे आन्तरिक रूप में परावर्तित करें ताकि एक दिन हम स्वयं एक चमकदार सितारा हो जाएं।" इसके बाद मालिक ने बच्चों को आगे बुलाया व कहा, "जिस तरह हर प्राकृतिक चीज़ अन्दर से बढ़ती है, उसी तरह आध्यात्मिक जीवन की भी आन्तरिक वृद्धि होनी चाहिये"।

एक दिन मालिक सुबह जल्दी उठ गये व बाहर आकर बैठने का निर्णय लिया। मालिक कुछ देर तक मौन बैठे रहे फिर उन्होनें अपने लिये समाचार-पत्र पढ़ने को कहा। किन्तु कुछ देर बाद जैसे ही सतबीर भाई आये, मालिक का ध्यान अपने ई-मेल देखने पर चला गया, वे अपना ई-मेल देखने में एकदम व्यस्त हो गये, इससे उनकी सजगता को देखा जा सकता था, कार्य करना उनकी सदैव प्राथमिकता रही है।

बुधवार १० जुलाई २०१३

मालिक ने प्रात: ९:०० बजे का सत्संग करवाया जो कि करीब ४० मिनट का था व उसके बाद उन्होंने ४ शादियां व एक सगाई करवाई, इसके बाद वे काफी थके हुए दिख रहे थे, तत्पश्चात वे आराम करने चले गये। उसी शाम को, चूंकि बाहर हल्की बारिश हो रही थी, मालिक ने अपने अहाते से ही सत्संग करवाया। जैसे ही सत्संग समाप्त हुआ, भारी बारिश होने लगी जो करीब ३० मिनट तक होती रही।

चेन्नई में मालिक के आगामी जन्मदिवस समरोह में आने वाले करीब १०,००० अभ्यासियों के ठहराने की व्यवस्था की जा रही थी, मालिक ने इस समारोह की तैयारी का बजट बनाकर प्रस्तुत करने को कहा।

चेन्नई में मानसून आ चुका था व एक रात मालिक अपनी पहियेदार कुर्सी पर बाहर आये व भारी बारिश देख आनन्दित होकर बोले, "२ घंटे तक इसी तरह अच्छी बारिश होनी चाहिये ताकि हमारी पानी की समस्या का समाधान हो जाये।

मालिक प्रशिक्षकों को सिटिंग देने में एकदम नियमित हो गये हैं। यह दिन का वह प्रथम कार्य है जो वे करना चाहते हैं तथा इस कार्य को करने में वे इतने केन्द्रित हैं कि किसी और सूचनाओं से उन्हें विचलित नहीं किया जा सकता, जब तक कि उनका मुख्य कार्य पूर्ण नहीं होता।

शनिवार १३ जुलाई २०१३

आज मालिक के लिये बहुत सारी व्यक्तिगत सिटिंग प्रतीक्षारत हैं। प्रात: ७:१५ पर उन्होंने अपनी सिटिंग समाप्त की व बाद में उनकी आंख का इलाज शुरू हो गया। मालिक अपने बाल कटवाते समय एल. सुब्रमन्यन का संगीत सुन रहे थे, तभी उन्हें सूचना मिली कि उनके एक करीबी सहयोगी अभ्यासी का देहांत हो गया है। मालिक का मूड एकदम बदल गया, वे पूरी तरह से एक दूसरी दुनिया में चले गये, कुछ देर बाद वे बोले, "एक सेकेंड यहां, तो दूसरे सेकेंड वहां, कहां पर, किसी को नहीं पता"।

तत्पश्चात वे एक घंटे तक पूर्णतः मौन थे.. आंखे बंद करके बैठे रहे या शुन्य में देखते रहे।

रविवार, १४ जुलाई,२०१३

मालिक ने ध्यान कक्ष में जाने की योजना बनाई, किन्तु उनके डॉक्टरों ने उन्हें कॉटेज के भीतर ही रहने की सलाह दी, क्योंकि उन्हें प्रातःकाल से ही कुछ बेचैनी हो रही थी। मालिक द्वारा विवाह समारोह के आयोजन का स्थान अब कॉटेज का केन्द्रीय हॉल हो गया है। उन्होंने सत्संग कराया और पाँच विवाह सम्पन्न कराए।

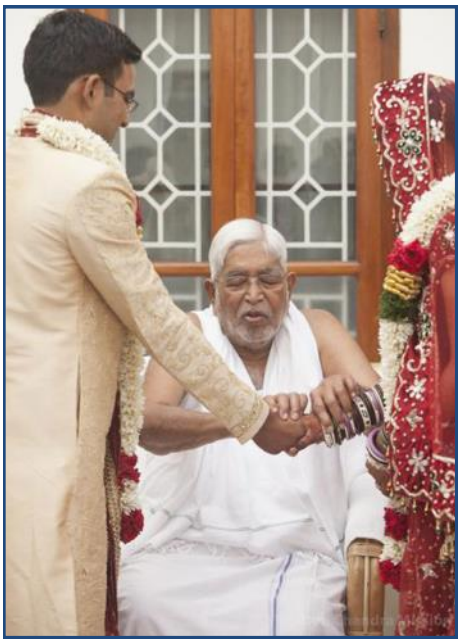

भाई संस्कृत कन्नन द्वारा गीता के प्रवचन सुनने हेतु मालिक हॉल में बैठे रहे, जो एक घंटे तक चला। अब तक गीता के उन्होंने प्रथम छह अध्याय पूर्ण कर लिए हैं। प्रत्येक सत्र के अन्त में मालिक समापन टिप्पणी करते हैं।

२० जुलाई को भार्गव यू.एस.ए. से लौटे। मालिक अति प्रसन्न थे और कहा, "स्वागत है पौत्र, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।" उन्होंने कुछ समय अपने परिवार के साथ व्यतीत किया, तत्पश्चात उपस्थित अभ्यासियों को सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात भाई वुल्लिमिअर और भाई अल्बर्टो से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में विचार-विमर्श किया। उन्होंने उनसे कहा, "किस प्रकार अहंकार रहित होकर विकसित हुआ जाता है-यही रहस्यमय तत्त्व है। शिशुओं का उदाहरण लीजिये, जैसे ही वे तीन वर्ष के होते हैं, वे अहंभावी हो जाते हैं। पिता कहते हैं, 'इसे करिये'। 'मैं जानता हूँ'। वृद्धि के प्रारम्भ में – आत्मविश्वास जगाने हेतु, विश्व का सामना करने हेतु, समाज में घुलने मिलने हेतु – इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक प्रतीत होता है। किन्तु यह हमारे दूध के दाँत के समान है, जो दाँतों का प्रथम समूह होता है। इनको जाना ही होता है। अतः इसी भाँति इस अहंकार हो परिपक्व होना चाहिये या हम कहेंगे कि उसे नम्रता में विकसित होना चाहिये।"

सोमवार, २२ जुलाई, २०१३–गुरु पूर्णिमा

एक अभ्यासी के जीवन में अपने गुरु के सान्निध्य में यह एक महत्वपूर्ण दिवस है। आश्रम अभ्यासियों से भरा था। मालिक जल्दी तैयार हो गए और प्रातः काफ़ी अभ्यासियों से मिले। हैदराबाद दल द्वारा 'कान्हा शान्ति वनम्' का बृहद् आकार का प्रतिमान लाया गया था जिसका मालिक ने विस्तृत अवलोकन किया। वे प्रतिमान से बहुत प्रभावित हुए और गर्व से कई अभ्यासियों को इसे देखने हेतु बुलाया और इसकी विशेषताओं का वर्णन किया।

मालिक ने प्रातःकालीन सत्संग ध्यान कक्ष में आयोजित किया और फ़िर एक वार्ता दी। वार्ता में उन्होंने कहा कि सहज मार्ग हमें असीम ईश्वरीय कृपा प्रदान करता है, लेकिन हम उसमें से कितना प्राप्त करने में सक्षम हैं? उन्होंने कहा, आप स्वयं को स्वपरीक्षण तथा स्वमूल्यांकन की आवश्यकता से मुक्त मत रखिए और कम से कम अब उन गंदी चीज़ों से दूर रहना प्रारम्भ कीजिए, जिन्हें आप जानते हो कि वे आप में हैं।"

मालिक का ८७वाँ जन्मोत्सव

मालिक प्रातः शीघ्र तैयार हो गए। उन्होंने रसोई दल द्वारा लाए गए प्रसाद को कृपालुता प्रदान की और उनके आग्रह पर एक केक भी काटा। भाई कृष्णा एवं परिवार तथा भाई कमलेश एवं उनका परिवार मालिक से मिले। सूर्योदय से पूर्व ही अभ्यासियों का एक बड़ा समूह कॉटेज के दरवाज़े पर प्रतीक्षा कर रहा था। मालिक अपने शयन कक्ष में बैठे थे और कॉटेज के स्वयंसेवकों ने अभ्यासियों को मालिक से मिलने व बधाई देने हेतु सुविधाएँ सुलभ कराईं। मालिक द्वारा प्रातःकालीन सत्संग के आयोजन से पूर्व लगभग २५० अभ्यासी मालिक से मिल चुके थे। मालिक ने उनकी पहियेदार कुर्सी से ध्यान कक्ष में प्रवेश किया। इस वर्ष चूँकि भण्डारा नहीं रखा गया था और अभ्यासियों को उन्हीं के स्थानीय केन्द्रों पर जन्मोत्सव मनाने को कहा गया था, अतएव एक वीडियो लिंक

स्थापित किया गया जो चेन्नई से सक्रिय(लाइव) विवरण प्रसारित कर रहा था।

सत्संग, पुस्तक प्रकाशन, मालिक की वार्ता तत्पश्चात उनकी घोषणा कि वे अब जा रहे हैं, किन्तु मालिक द्वारा तुरन्त यह कहते हुए कि वे पुनः वार्ता करना चाहेंगे और इस तरह उनकी दो वार्ताएँ, भजन सभी दिव्य थे और सभी जो मणपाक्कम एवं अन्य स्थानों पर थे उनके लिए यह एक महान् अनुभूति थी।

अपनी पहली वार्ता में गुरुदेव ने हमें याद दिलाया कि हमारा अध्यात्मिक विकास केवल हमारे अपने लिये ही नहीं होता है। हमारे बच्चों को भी हमारे साथ विकसित होना चाहिये तथा हमारे सामाजिक दायरे को भी हमारे साथ क्रमिक विकास करना चाहिये। उन्होंने यह भी कहा, "हमारे लिये चयन की स्वतन्त्रता सबसे अधिक ख़तरे की चीज़ है, क्योंकि जब तक तुम में चयन करने के लिये विवेक नहीं है, यह तुम्हें सारी बुरी चीज़ों के लिये स्वयं को दोषी ठहराने में मददगार होता है।..... सहज मार्ग सरल है, परन्तु यह तुमसे सरल बनने के लिये साहस की माँग करता है। जो तुम्हारे दिल में है, उसे कहने लायक बनने के लिये यह हिम्मत चाहता है।"

अपनी दूसरी वार्ता में गुरुदेव ने कहा, "आप सब के बिना मैं अकेला महसूस करता हूँ। यहाँ तक कि उत्सव प्रारम्भ होने से पहले से मैं सोच रहा हूं कि वे सब लोग केवल थोड़े दिनों के लिये ही आ रहे हैं और उसके बाद वे सब मुझे छोड़ कर चले जायेंगे और मैं बहुत अकेला अनुभव करता हूँ, मैं बहुत दुःखी हो जाता हूँ। इसलिये मेरे एकाकीपन को दूर करने के लिये मुझे अपने आध्यात्मिक मार्ग में साथी चाहिये, जिनकी उपस्थिति मैं हमेशा महसूस कर सकूँ, चाहे वे यहाँ पर उपस्थित हों या नहीं"।

प्रातःकालीन सत्र के पश्चात गुरुदेव ने कॉटेज में अभ्यासियों से मिलना जारी रखा। दोपहर करीब लगभग पचास रूसी अभ्यासियों का एक दल गुरुदेव के शयन कक्ष में आया और वातावरण बदल गया, एक हल्कापन छाने लगा, और गुरुदेव ने अचानक पूजा देने का निर्णय किया! उन्होंने बाद में रूस जाने के लिये अपनी गहरी रुचि व्यक्त की और रूसी अभ्यासियों का दल अगली गर्मियों में इसके लिये रूपरेखा तैयार कर रहा है। जब ऐसी कोई स्वप्रेरित और आनन्ददायक घटना होती है तो मालिक के स्वास्थ्य की समस्या कोई बड़ा कारण नहीं बन सकती। गुरुदेव का कमज़ोर स्वास्थ्य होते हुए भी यात्रा करने में उनकी गहरी रुचि ने अनेकों की आँखों में खुशी के आँसू ला दिये।

शाम के समय बाँसुरी वादक भाई शशांक ने ध्यान कक्ष में फ़्यूजन अंदाज में संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का एक भाग गुरुदेव ने सीधे प्रसारण के अन्तर्गत देखा। दिन का समापन हमेशा की तरह गुरुदेव द्वारा फ़िल्म देखने तथा लगभग १० बजे रात्रि सोने के लिये जाने के साथ हुआ।

गुरुवार जुलाई २५, २०१३

गुरुदेव अपने कार्यालय में थे और अपनी ई–मेल देख रहे थे तथा सत्संग समाप्त होने का इन्तजार कर रहे थे। फ़िर उन्होंने भाई कमलेश की वार्ता को बहुत ध्यान पूर्वक सुना। इसके बाद, मोल्दोवा ध्यान केन्द्र के ऊपर एक लघु वीडियो दिखाई गयी। गुरुदेव इस वीडियो को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। ध्यान केन्द्र की बनावट उत्कृष्ट प्रकार की थी। रसोई घर एवं भोजन सुविधायें उच्च स्तर की थीं, आवास सुविधा ऐसी लगती थी मानो आलीशान होटल के कमरे हों; और गुरुदेव ने कहा कि ध्यान कक्ष तो ऐसा लगता है जैसे अन्तरिक्ष यान उड़ान भर रहा हो। गुरुदेव और कमलेश भाई बहुत कम अभ्यासियों वाले छोटे से केन्द्र द्वारा किये इन प्रयासों को देख कर बहुत प्रसन्न व रोमांचित थे।

वीडियो के बाद गुरुदेव ने समूह को एक सिटिंग दी और उसके बाद उन्होंने कक्ष में सभी से सिटिंग का अपना अनुभव बताने के लिये कहा। प्रत्येक ने अपना अनुभव बताया और सबको सुनने के बाद गुरुदेव ने कहा, "यह सिटिंग असाधारण थी क्योंकि जो कार्य मैंने किया उसमें एक विशिष्ट तकनीक प्रयोग की जाती है।"

गुरुदेव सफलता और असफलता के बारे में बात कर रहे थे और उन्होंने कहा, "असफलता व्यक्तिगत होती है। सफलता नहीं । मेरी बिक्री की बातों में मैं अक्सर सहयोग के बारे में बात किया करता था, जब कार अच्छी तरह से काम कर रही है, क्या आप बता सकते हैं कि यह क्यों काम कर रही है। आप नहीं बता सकते। लेकिन, यदि यह खराब हो जाती है, आप निश्चित तौर पर बता सकते हैं कि इसकी असफलता का क्या कारण है।"

अगस्त २०१३

शुक्रवार २ अगस्त को लूनर कैलेन्डर के हिसाब से गुरुदेव का जन्म–दिवस था और कॉटेज में सभी भाईयों ने धोती और नीली कमीज पहनी थी। गुरुदेव ने सुबह के समय प्रसाद दिया और लगभग पचास लोगों के लिये दोपहर के भोजन की योजना बनायी। वे प्रांगण में आये और सबके साथ दोपहर का भोजन किया।

उत्तर अमरिका के प्रशिक्षकों की गोष्ठी– ८ से १० अगस्त

८ तारीख़ की सुबह गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक नहीं था और प्रशिक्षकों के कॉटेज के बाहर एकत्रित हो जाने के बावजूद कार्यक्रम मे परिवर्तन करना पड़ा और वे सब ऑडिटोरियम वापस चले गये क्योंकि गुरुदेव उनको सम्बोधित करने की स्थिति में नहीं थे।

लेकिन इसके बाद शाम को गुरुदेव सबको आश्चर्यचकित करते हुये आये और कॉटेज के बाहर बैठ गये। उत्तर अमरिका के प्रशिक्षकों ने गुरुदेव के साथ काफी समय व्यतीत किया और उन्होंने उन सबको सम्बोधित भी किया। भाई संतोष श्रीनिवासन और चौदह सहयोगी शिक्षकों ने लगभग १४० प्रशिक्षकों के लिये 'प्रशिक्षकों के अनुभवों में गहराई लाना' कार्यशाला संचालित की। भाई कमलेश ने भी तीनों दिन प्रशिक्षकों को वार्ता दी। गोष्ठी का समापन रविवार को प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ।

शुक्रवार ९ अगस्त, २०१३

ईद पर रमज़ान के अन्तिम दिन पर एक मुस्लिम परिवार जो आश्रम के समीप रहते हैं, हर साल आते हैं और गुरुदेव का आशिर्वाद लेते हैं। गुरुदेव ने उनको आमन्त्रित किया, सभी बच्चों से मिले, उनको मिठाईयां दीं, प्रसाद बनाया और जो भी वहाँ उपस्थित थे सबको वितरित किया और उसके बाद हमेशा की तरह सिटिगं दी।

उत्तर अमरिकियों की संगोष्ठी – ११ अगस्त से १७ अगस्त

उत्तर अमरिका और कनाडा के भाई और बहनें गुरुदेव द्वारा दिये गये

विषय: "पूर्वाग्रह आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी अड़चन है" को लेकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये एक साथ एकत्रित हुए। गुरुदेव ने विशेष रूप से भाईयों – पी.आर.कृष्णा, कमलेश, रॉब क्लिंगर, कानन, विनोद और बहन एलिज़ाबेथ को वक्ताओं के रूप मे नियुक्त किया।

भाई कमलेश ने मिशन के साहित्य को पढ़ने के महत्व पर बल दिया और इसलिये दोपहर के समय को हमारे मालिकों की कृतियों को पढ़ने

भाई कमलेश पटेल १५ अगस्त को देश के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतीय झंडा फहराते हुए।

मे व्यतीत करने का सुझाव दिया ।

भाई कमलेश पटेल ने हमारे महान गुरुदेवों के लेखों के बारे में जानकारी के महत्व के बारे में बताया।

सभा ने उन ईच्छुक युवाओं के लिए प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए जो सहज मार्ग के बारे में चर्चा करना चाहते थे, आध्यात्मिकता की भूमिका, यह कैसे युवाओं से सम्बंधित है तथा गुरुदेव उनके जीवन में क्या भूमिका अदा करतें हैं आदि जानना चाहते थे।

भाई विक्टर कन्नन ने छात्रों और प्रशिक्षकों के लिए 'यू–कनेक्ट' (यूनिवर्सिटि– कनेक्ट) कार्यक्रम का परिचय दिया। भाई कृष्णा लिंगा ने उच्च शिक्षा के अभ्यासिओं को सहज मार्ग में सक्रिय होने के लिए आमन्त्रित किया जिससे कि सहज मार्ग भावी पीढियों तक पहुंच सके।

चेन्नई में इस सेमिनार के दौरान लगातार बारिश हुई और १६ अगस्त तक कम हो गई। हर दिन शाम की पूजा के बाद गुरुदेव की कुटीर के द्वार सभी अभ्यासियों के लिए खुल जाते थे। १६ अगस्त की शाम को एक हिम्मत वाले ८ वर्ष के बच्चे ने गुरुदेव से पूछा, "हे गुरुदेव, ईश्वर ने अपने आप को आपके अन्दर क्यों छुपा लिया है, वह अपने आप को स्वयं क्यों नहीं दिखा सकता"। गुरुदेव ने कहा, "यदि ईश्वर छुप रहा है तो इसके पीछे अवश्य ही कुछ कारण होगा। यदि कारण पता चल जाए तो उसके छुपने का क्या उद्देश्य रह जायेगा?" केवल गुरुदेव ही ऐसा सुंदर उत्तर दे सकते थे।

१७ अगस्त की शाम को गुरुदेव मुस्करा रहे थे और बच्चों के एक बड़े समूह के साथ हाथ मिला रहे थे जोकि गुरुदेव के पास होने से बहुत खुश लग रहे थे। धीरे– धीरे बड़े, कुछ सहासी लोग, भी गुरुदेव का मिठाइयों के साथ अभिनन्दन करने के लिए आगे आने लगे। गुरुदेव ने हरेक को धैर्य और शांन्ति के साथ अनुग्रहित किया। एक भाई ने सेमिनार के शीर्षक के बारे मे पूछा, "गुरुदेव, क्या प्रेम पूर्वधारणा का उल्टा है?" गुरुदेव ने उसी क्षण उत्तर दिया कि, "प्रेम का कोई विलोम नहीं है।" उन्होंने कहा कि जैसे ईश्वर का कोई विलोम नहीं है, ऐसे ही प्रेम का भी कोई विलोम नहीं है।

यह पूछने पर कि उनका स्वास्थ्य कैसा चल रहा है, उन्होंने कहा, "बहुत अच्छा तो नहीं है लेकिन कुछ शिकायत भी नहीं है।" उनको देखना मन्त्र मुग्ध करने वाला था और ये शान्ति से भरे हुए क्षण थे।

पूरे सेमिनार के दौरान, गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। इसलिये, उनकी सारी योजनाबद्ध यात्राएं, सभाएं और सत्संग निरस्त कर दिये गये थे किन्तु गुरुदेव की तत्परता पूरे जोरों पर थी। जब भी उनका स्वास्थ्य ठीक रहा, उन्होंने अपने आप को उपलब्ध कराया, वे अपनी कुटीर के बाहर आए, अभ्यासियों से मिले और दूसरों द्वारा दी गई वार्ताएं आदि सुनी। उन्होंने बताया, "मेरी अभ्यासियों के लिए उप्लब्धता ज़्यादा से ज़्यादा ऊपर (बाबूजी महाराज की तरफ इशारा करते हुए) से नियन्त्रित की जा रही है और यह अधिकाधिक कम की जा रही है। जो ़चीज अधिक मात्रा में उप्लब्ध होती है, उसकी अधिक तवज्जो नहीं होती है। इसलिए मैं हरेक को ये सलाह देता हूं कि वे इस अवसर का ज़्यादा से ज़्यादा लाभ उठाएं।"

पूज्य गुरुदेव का ८७वा जन्मदिवस समारोह

सारे देश में प्रिय गुरुदेव के ८७ जन्मदिन को मनाने के लिए पूरे दिन के कार्यक्रम की व्यवस्था की गई थी। अनेक केंद्रों में दिन कि शुरुआत ध्यान से हुई, जिसके उपरांत नाटक एवं नृत्य के कार्यक्रम युवक अभ्यासियों और बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गए। अभ्यासी भाई–बहनों द्वारा गाये गए भजनों ने भक्ति और शांति का माहौल रचा।

प्रिय गुरुदेव को परदे पर देखकर सारे अभ्यासियों के दिल में एक अंदरूनी खुशी की लहर दौड़ गई। चेन्नई से अनुष्ठान के सीधे प्रसारण ने गुरुदेव के साथ एक प्रकार के वास्तविक जुड़ाव का अहसास करा दिया। कुछ केंद्रों में केक काटे गए और जन्मदिवस के गाने भी गाये गए। उसके बाद व्हिस्पर्स के संदेश पढ़े गए, नाटक एवं बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

कई केंद्रों में मामूली तौर पर आने वाली संख्या से बहुत अधिक अभ्यासियों का जमाव था। सारे केंद्रों में वार्ता, नाटक, समूह वादविवाद द्वारा सहज मार्ग के अनेक पहलुओं को चिन्हांकित किया गया जैसे कि सही आचरण, समर्पण, विश्वास, लक्ष्य और पथ। गुरुदेव के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को वार्ता, नाटक एवं समूह वादविवाद के द्वारा अभ्यासियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

छोटे और बड़े, दोनों केन्द्रों ने हर कोशिश की कि ऐसे वादविवाद और संवादमूलक सत्र का प्रायोजन किया जाए जिससे अभ्यासियों की सोच, उद्देश्य, माध्यम और लक्ष्य को पाने कि प्रवृत्ति की ओर संरेखित हो। पूरे भारत में अनेक केंद्रों पर पूरे दिन अभ्यासी आत्मविश्लेषण में व्यस्त रहे और भक्ति, प्यार एवं अंदरूनी खुशी के अहसास के साथ उत्सव मनाया गया।

Ahmednagar

Nagpur

Gondia

Solapur

Bhilwara

Jodhpur

Jaipur

Phulgaon

Madurai

Kolkata

Ranchi

Chikali

लुधियाना, पंजाब में पहला आश्रम

लुधियाना–पाखोवाल सड़क पर स्थित यह आश्रम लुधियाना रेलवे–स्टेशन से १० कि.मी. तथा बस–अड्डे से ६ कि.मी. दूर है। यह आश्रम २००० वर्ग यार्ड क्षेत्रफल पर निर्मित है जिसमें तीन दो मंजिला ब्लाक में मास्टर कॉटेज, ध्यान कक्ष, निवास गृह, बाल केन्द्र, कार्यालय, रसोई –घर तथा स्नानागृह है। ध्यान कक्ष में ३५० व्यक्ति बैठ सकते हैं। आश्रम में एक घंटी है जिसकी रूपरेखा विशेष रूप से अमेरिका में तैयार की गई तथा गुरुदेव ने इसकी स्वीकृति दी।

आश्रम का उद्घाटन २२ जुलाई, गुरुपूर्णिमा के दिन ज़ोन–प्रभारी भाई मेजर जनरल (रिटायर्ड) हरभजन सिंह द्वारा करीब ३०० अभ्यासियों की उपस्थिति में किया गया। गुरुदेव ने चेन्नई से वीडियो लिंक द्वारा आश्रम का खुलना घोषित किया तथा सभी अभ्यासियों को सलाह दी कि वे इस सुविधा का पूरा लाभ उठाएँ जिससे उनका आध्यात्मिक उत्थान हो सके। भाई हरभजन सिंह ने सत्संग संचालित किया तथा अभ्यासियों को सम्बोधित किया। लुधियाना के केन्द्र–प्रभारी भाई रमन कपूर ने इस भव्य भेंट के लिए गुरुदेव का धन्यवाद किया तथा सभी अभ्यासियों और स्वयं–सेवकों को भी धन्यवाद दिया। सभी अभ्यासियों को वातावरण आलोकिक प्रतीत हुआ तथा गुरुदेव की उपस्थिति महसूस हुई।

मनामदुरै, तमिलनाडु

शिवगंगै ज़िले में मनामदुरै केन्द्र कई वर्षों से प्रशिक्षक भाई राधाकृष्णन के निवास पर कार्यशील रहा है। कुछ ही समय पहले भाई नित्यानन्दनम् ने ३३ सेन्ट भूमि भेंट में दी। इस भूमि पर करीब २४०० वर्ग फ़ीट का ध्यान–कक्ष तथा एक रसोई–घर, स्नानगृह और एक कार्यालय बनाया गया। गुरुदेव की अनुमति से २० जून को ज़ोन–प्रभारी भाई टी. वी. विश्वनाथ राव ने सत्संग कराया। आस–पास के केन्द्रों के लगभग २०० अभ्यासियों ने सत्संग में भाग लिया तथा वे शाम के सत्संग तक रुके।

वडकंगूलम, तमिलनाडु

वडकंगूलम, तिरूनेलवेलि, तूतुकुड़ी और कन्याकुमारी केन्द्रों के लगभग ३०० अभ्यासी वडकंगूलम आश्रम में एकत्रित हुए जहाँ गुरुदेव का जन्मदिन मनाया गया तथा नव–निर्मित मास्टर–कॉटेज का उद्घाटन किया गया। आश्रम की बुनियादी संरचना में एक ध्यान–कक्ष, स्नानागृह तथा एक फ़ूस की छत वाला रसोई–घर है। साथ ही एक स्थायी मास्टर –कॉटेज और पहली मंजिल पर अभ्यासियों के लिए कक्षा है जिसका उपयोग निवास–गृह के रुप में भी किया जा सकता है।

सुबह ८:३० बजे कॉटेज का उद्घाटन किया गया तथा ९:०० बजे भाई ए.पी. दुरई ने सत्संग कराया। इसके पश्चात गुरुदेव की वार्ता का एक अंश पढ़ा गया जिसमें उन्होनें कहा है कि आध्यात्मिक उपस्थिति केवल आश्रम में ही नहीं किन्तु हर जगह महसूस की जानी चाहिए। इसके बाद कुछ अभ्यासियों ने अपने विचार प्रकट किए तथा सामूहिक चर्चाएँ की गईं। साथ ही आश्रम के इतिहास पर एक वीडियो प्रस्तुतिकरण दिखाया गया तथा गुरुपूर्णिमा पर गुरुदेव के द्वारा दी गई वार्ता सुनाई गई। सत्संग के साथ कार्यक्रम का समापन होने से पहले सहज–मार्ग पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई।

पय्यानुर, केरल

गुरुदेव के द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार २२ जुलाई, गुरु पूर्णिमा के दिन ज़ोन–प्रभारी भाई के. यू. मोहन ने ध्यान–कक्ष की नीवं का पत्थर रखा। ६५ अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पहले सत्संग कराया गया एवं तत्पश्चात नींव डालने का कार्यक्रम हुआ। साथ ही कुछ पौधे भी लगाए गए। नाश्ते के बाद सभी अभ्यासी सामुहिक–चर्चा के लिए ध्यान–कक्ष में एकत्रित हुए। केन्द्र–प्रभारी भाई टी. वी. कुन्ही कन्नन ने अपने अभिनंदन भाषण में कहा कि इस विशेष दिन आश्रम की जो नींव डाली गई है वह पय्यनुर आश्रम के विकास में एक मील का पत्थर है। उन्होनें आश्रम के निर्माण–कार्य के लिए सभी अभ्यासियों से पूरे मन से भाग लेने की मांग करी। उन्होंने कहा कि गुरुदेव द्वारा यह स्वर्णिम अवसर सभी अभ्यासियों को सेवा के द्वारा विकसित होने के लिए दिया गया है।

एक केन्द्र का खिलना–जावरा, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में रतलाम के पास एक छोटे कस्बे जावरा में कई वर्षों से केवल दस नियमित अभ्यासी थे। बहन रुचि की पहल पर १२ जुलाई को एक खुला सत्र आयोजित किया गया और पचहत्तर अभ्यासियों ने सहज मार्ग अभ्यास शुरु किया। २४ जुलाई को मालिक का जन्मदिन जावरा में नये अभ्यासियों के साथ मनाया गया। इसके बाद जोनल प्रभारी भाई प्रभाकर दास ने कुछ प्रशिक्षकों व अभ्यासियों के साथ पूर्णदिवसिय कार्यक्रम के लिये ३ व ४ अगस्त को जावरा और रत–ालाम का दौरा किया। जावरा के पैंसठ अभ्यासियों ने रतलाम और मन्सौर के अभ्यासियों के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। सहज मार्ग अभ्यास पर भाई दास द्वारा दी गयी वार्ता व प्रस्तुति और प्रश्नोत्तर सत्र और प्रशिक्षकों के साथ अनौपचारिक विचार विमर्श ने अभ्यासियों को अपने संदेह दूर करने का अच्छा अवसर प्रदान किया।

९ व १० अगस्त को छब्बीस इच्छुक मिशन में शामिल हुए। इस प्रकार दशकों से एक दर्जन से कम अभ्यासियों का केन्द्र ११२ अभ्यासियों से अधिक का, जो कि उत्साहपूर्वक सहज मार्ग को एक जीवन के मार्ग के रूप में अपना रहे हैं, हो गया है। आस पास के केन्द्रों के प्रेरकों व प्रशिक्षकों द्वारा प्रदर्शित भाईचारा व समूहकार्य अनुकरणीय था।

परमकुडी, तमिलनाडु

६ व ७ जुलाई २०१३ को चेन्नई से प्रशिक्षक भाई अरुणाचलम के साथ चौदह अभ्यासियों के समूह ने परमकुडी और मनमदुरै केन्द्र का दौरा किया। ६ जुलाई को परमकुडी में २५ स्थानीय अभ्यासियों के साथ सुबह ११:३० बजे सत्संग से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

दोपहर के भोजन के बाद, सभी अभ्यासी मनमदुरै, जहाँ हाल ही में एक नये ध्यान कक्ष का उदघाटन किया गया है, के लिये रवाना हुए। उनका वहाँ केन्द्र प्रभारी भाई राधाकृष्णन व एकत्रित सत्तर अभ्यासियों ने स्वागत किया। आबंटित विषयों पर समूह चर्चा ने कक्ष को उत्साह से भर दिया। इसके बाद सायँ ७:३० बजे सत्संग हुआ और अभ्यासी रात्री में परमकुडी लौट आये।

रविवार को, परमकुडी, रामनाथपुरम, सिंगमपुनारी, मदुरै, शिवगंगै, मनमदुरै और चेन्नई के सात प्रशिक्षकों सहित लगभग साठ अभ्यासी थे। सहज मार्ग के मूल तत्व और मालिक, मिशन, व पद्धति पर प्रश्नोत्तरी पर आधारित प्रश्न उत्तर सत्र में अभ्यासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जो कि वास्तव में आयोजकों के लिये भी उत्साहवर्धक था। इस दिन तीन सत्संग आयोजित हुए। सभी सत्र भाई अरुणाचलम द्वारा संयोजित व आयोजित किये गये। सत्र अभ्यासियों में सहजमार्ग की बेहतर समझ पैदा करने में बहुत उपयोगी थे।

बनशंकरी, बंगलौर

"मनन– साधनेय चिंतन शिविर" कन्नड़ में एक कार्यक्रम का २ बैचों में लगभग ११० अभ्यासियों के साथ १३–१४ जुलाई और ३ –४ अगस्त को आयोजन किया गया। इसको भाई बी. श्रीनिवास ने नियोजित व समन्वित किया और सहयोगी बहन वसंतकुमारी, भाई डा. कृष्णमूर्ति व भाई बी. जी. सुब्रमण्य के साथ संचालित किया जिन्होनें साधना के मूल तत्वों पर विस्तार से चर्चा की। अभ्यासियों को प्रश्नों के साथ विषय दिये गये जिससे कि साधना के सूक्ष्मतर पहलूओं को समझकर समूह में चर्चा व उसे प्रस्तुत किया जा सके। सहयोगियों द्वारा व्याख्या व स्पष्टीकरण, मालिक के उद्धरण और प्रश्नोत्तर सत्र ने सभी संदेहों को दूर करने में मदद की। फ़ीडबैक उत्साहजनक थी और कार्यक्रम ने ललक के विकास में सहायता की जिससे आध्यात्मिक उन्नति भी जल्दी होगी ।

युवा कार्यक्रम

मुंबई, महाराष्ट्र

३ अगस्त २०१३ को नवनिर्मित प्रशिक्षण कक्ष में मुम्बई तथा पुणे के ६३ युवाओं ने भाई मोहनदास हेगड़े द्वारा "सहज मार्ग मे अपनी रुचि को पुन: जागृत एवं स्थापित करना" विषय पर सत्र में भाग लिया।

परिचय के बाद उन्हें डायरी में अपने आप से एक वचन लिखने तथा उसे पूरा करने हेतु इस कार्यक्रम से कुछ सीखने के लिये कहा गया। इसके बाद "सन्तुलित जीवन की आवश्यक्ता" पर एक प्रस्तुतीकरण तथा "दैनिक अभ्यास में रुचि उत्पन्न करना" तथा "छाप–रहित जीवन कैसे जीयें" पर सामुहिक चर्चा का आयोजन किया गया। इन चर्चा सत्रों से युवकों को अपनी साधना में नई रुची पैदा करने में मदद मिली। भाई हेगड़े ने सत्र का समापन सहज मार्ग साधना के उद्देश्य तथा सायं के सत्संग के साथ किया।

भीलवाड़ा, राजस्थान

२८ जुलाई २०१३ को १५ अभ्यासियों ने एक युवा गोष्ठि में भाग लिया। उन्होंने चर्चा की कि कैसे हम मालिक की याद में दैनिक कार्य करें, जिससे कार्य पूजा बन जाये। इस विषय पर कुछ अभ्यासियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस विषय से सम्बंधित मिशन के साहित्य से उद्धरण पढ़ कर सुनाये गये। यह तय किया गया कि प्रत्येक को सतत स्मरण का अभ्यास करना चाहिए ताकि आगामी गोष्ठि में सभी अपने अनुभव बांट सकें।

श्री गंगानगर राजस्थान

"स्वअनुशासन" विषय पर आयोजित सत्र में १५ अभ्यासियों ने भाग लिया। इस विषय पर एक वीडियो क्लीपिंग भी दिखाई गयी। इसके बाद बाबूजी के उद्धरण "शिष्य केवल वही है जो अनुशासित है" पर चर्चा हुई । चर्चा इस निष्कर्ष के साथ समाप्त हुई कि दैनिक साधना एवं दस उसूलों का नियमित अनुशरण करने से, स्वयं अनुशसित होने तथा जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

कोलकता, पश्चिम बंगाल

कोलकता तथा निकटवर्ती केन्द्र जैसे रानीगंज, आसनसोल, झरग्राम तथा दुर्गापुर के लगभग ४० अभ्यासियों ने बी एम ए कोलकाता में आयोजित दो दिवसीय गोष्ठी में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सायं के सत्संग के साथ हुई तथा बाद मे "इसे आगे बढाएं" गीत पर आधारित परिचय सत्र हुआ।

दस उसूलों पर आधारित विषयों ने "आन्तरिक एवं बाह्य सन्तुलन" बनाने तथा उनका पालन करने में उन्हें बहुत प्रेरित किया। अगले दिन सुबह, साधना के महत्वपूर्ण पहलुओं से सन्बंधित मालिक की वार्ताओं के कुछ अंश दिखाये गये, जिसमें अन्तराल के दौरान का समय सुने गये शब्दों पर चिंतन एवं मनन करने के लिये था। कंचा एवं पाइप दौड ने हमारे जीवन में सन्तुलन के महत्व को विशेषरूप से दर्शाया। 'सिर्फ दो मिनट' सत्र में प्रत्येक प्रतिभागी को दिये गये विषय पर मात्र दो मिनट बोलना था। कार्यक्रम का समापन सायं के सत्संग एवं प्रतिपुष्टि (फ़ीड्बैक) सत्र के साथ किया गया ।

मुम्बई: अलीबाग की सैर

१५ जून २०१३ को ४५ युवा एवं कुछ प्रशिक्षक पनवेल आश्रम से अलीबाग गये। इस सैर का लक्ष्य एक दूसरे को जानने एवं मालिक की याद में रहना था। स्थल पर पहुंच कर मालिक की वार्ता दिखाई गयी। इसके बाद दस उसूलों पर एक रुचिपूर्ण गतिविधि का आयोजन किया गया। अलीबाग के शहरी क्षेत्र में दोपहर का भोजन करने के उपरान्त बाकी समय समुद्र के किनारे पर

...contd.

व्यतीत किया गया। रात्रि भोजन के पश्चात भाई इचक अडिजेस की एक वीडियो चलाई गई और थके हुए युवा सो गए। लड़के भाई टिल्लू के घर ठहरे और लड़कियों ने बहन पीना शाह के घर रात बिताई। अगली सुबह सत्संग करवाया गया। उसके बाद एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमें किस प्रकार साधना और मिशन के कार्यों में अधिक से अधिक समर्पित भाव से सहभागीदारी दे सकें, इस विषय पर चर्चा हुई। सत्र के उपरान्त पनवेल आश्रम लौटते समय युवाओं ने समीप के अन्य छोटे केन्द्र नागोथाने का भ्रमण किया।

नई नियुक्तियाँ

केन्द्र प्रभारी

भाई गौरी शंकर द्विवेदी
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

भाई दिलीप कुमार सिंह
फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

भाई प्यारे लाल
मुगलसराय, उत्तर प्रदेश

भाई रवि कुमार जैन
रोबर्टसगंज(सोनभद्र), उत्तर प्रदेश

भाई जे. के. मेहरोत्रा
बहराईच, उत्तर प्रदेश

भाई नरेश चावड़ा
धनबाद, झारखण्ड

बहन एलिजाबेथ डेनली
निर्देशक, इतिहास और पुरालेख विभाग

एक निमंत्रण

प्रकाशन टीम अभ्यासियों और उनके बच्चों को प्रकाशन के लिए विषय वस्तुओं के योगदान के लिए आमंत्रित करती है। प्रस्तुतिकरण निम्नांकित वर्ग में से एक या एक से अधिक हो सकते हैं।

१) कला, कोलॉज, चित्रकारी या अन्य दूसरे प्रकार की कलाकृति जो तुम्हारी अपनी हो।
२) फोटोग्राफ जो तुम्हारे द्वारा व्यक्तिगत रूप से लिए गए हों।
३) अडोबी फोटोशॉप या ऐसे ही साफ्ट्वेयर द्वारा तैयार की गई डिज़ाइन – उसमें साफ साफ बताते हुए कि ये चित्र/ कलाकृति कहां से ली गई है।

इस प्रकार के डिज़ाइन योगदान वाली प्राप्तियों की प्रकाशन टीम द्वारा समीक्षा की जाएगी तथा इनका चयन मिशन के प्रकाशन विभाग द्वारा पुस्तकों के मुख्य पृष्ठ के प्रारूप या ऑडिओ– व्हीडियो प्रकाशन के उपयोग में लाया जा सकता है। आप के ध्यानाकर्षण के लिए विषय वस्तु भेजते समय इस बात का ध्यान रखें कि आपको स्पिरिचुअल हायरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट की ओर से विज्ञापन अधिकार पूरी तरह स्वीकृत किए गए हैं।

ये योगदान निम्नलिखित तरीके से भेजें जा सकते हैं।

१) इलेक्ट्रॉनिक तरीके से एक कम रेज़लूशन की डिजिटल (<१ एमबी) कापी design@shpt.in इस पते पर ई–मेल द्वारा भेजें। यदि आप की कलाकृति का चयन होता है तो हम उच्च रेज़लूशन की फाइल का अनुरोध करेंगे।
२) निम्न पते पर डाक द्वारा भेजें

डिज़ाइन टीम
स्पिरिचुअल हायरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट
प्रशासनिक भवन, बाबुजी मेमोरिअल आश्रम
मणपाक्कम, चेन्नई–६०० ०२५

कृपया अपना डिज़ाइन जमा करवाते वक्त अपना नाम, उम्र (यदि बच्चे हो) अभ्यासी पहचान पत्र (अभिभावक की, यदि बच्चा जमा करवाता है), केन्द्र का नाम, संपर्क पता, फोन नं और ई–मेल पता उपलब्ध करवाएं । यदि आपके डिज़ाइन प्रकाशन के लिए चयन हुए तो डिज़ाइन टीम आपसे संपर्क करेगी।

मालिक का स्वास्थ्य

प्रिय भाइयो एवं बहनों,
मुझे ख़ेद है कि पूज्य मालिक के स्वास्थ्य की सूचना मैंने आप को काफी दिनों से नहीं दी। पूज्य मालिक वर्तमान चिकित्सा से ठीक महसूस कर रहें हैं, परन्तु दवाईयों के प्रभाव से वे कमज़ोर हो गए हैं।

वे मात्र आत्म बल के ज़ोर पर नियमित रुप से फिजियोथैरेपी कर रहें हैं।

उनके सभी मापदण्ड सामान्य हैं। कृपया उनके अच्छे स्वास्थ के लिए प्रार्थना करें।

वे आप सभी को आपकी प्रार्थना के लिए धन्यवाद देते हैं जो उन्हें लाभ पहुँचा रही है।
भवदीय,
डॉ. नटवर शर्मा

नए प्रकाशन

इन्स्पीरेशन्स
डी वी डी अंग्रेजी

ए रेअर अपॉरचूनीटी
डी वी डी अंग्रेजी

इनवरटेंडो
डी वी डी अंग्रेजी

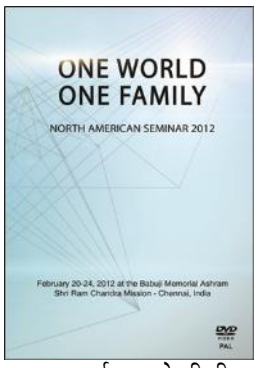

वन वर्ल्ड वन फ़ेमीली
डी वी डी अंग्रेजी

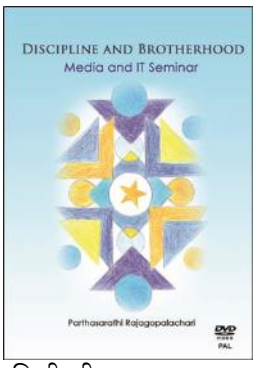

डिसीप्लीन एन्ड ब्रदरहुड
डी वी डी अंग्रेजी

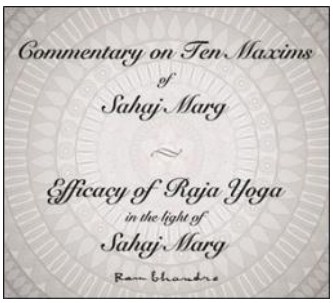

सहजमार्ग के दस नियमों की व्याख्या और सहजमार्ग के प्रकाश में राजयोग का दिव्यदर्शन
एम पी ३ अंग्रेजी

सहजमार्ग के दस नियमों की व्याख्या और सहजमार्ग के प्रकाश में राजयोग का दिव्यदर्शन
एम पी ३ तमिल

सहजमार्ग के दस नियमों की व्याख्या और सहजमार्ग के प्रकाश में राजयोग का दिव्यदर्शन
एम पी ३ हिन्दी

सत्य का उदय
एम पी ३ तमिल

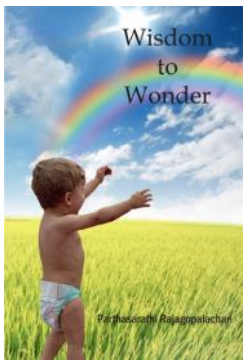

विजड्म टू वन्डर
अंग्रेजी

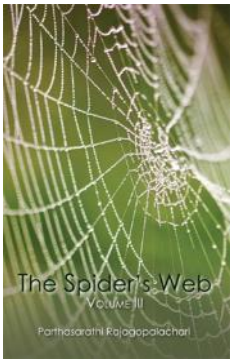

स्पाईडर्स वेब भाग ३
अंग्रेजी

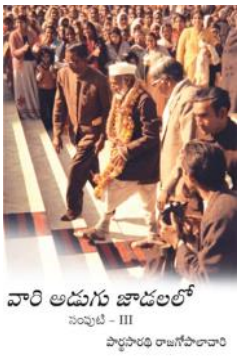

उनके पदचिन्हों पर –भाग ३
तेलगु

डाउन मेमोरी लेन
हिंदी

हृदय की आवाज २००३
तमिल

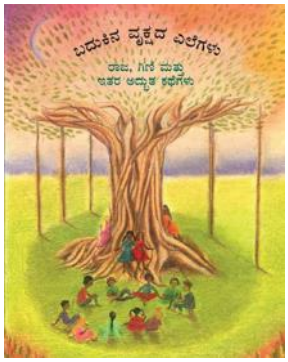

टेल्स ऑफ वन्डर भाग १
कन्नड़

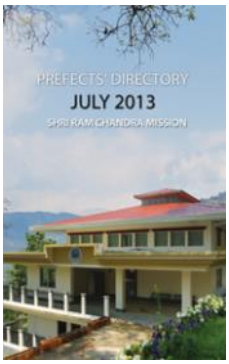

प्राशिक्षक डायरेक्टरी

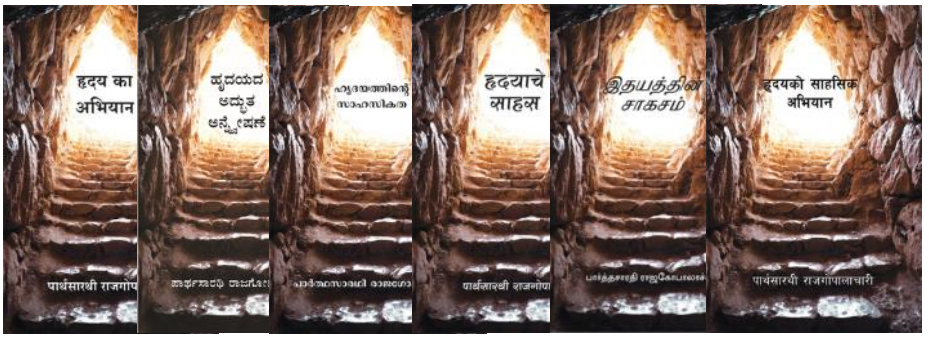

हृदय का अभियान (दी हार्ट्स एडवेन्चर)

ईरोड आश्रम, तमिलनाडु

प्रकाश का केन्द्र

ईरोड केन्द्र का प्रथम अभ्यासी कोयम्बटूर से स्थानान्तरित होकर आया था। ईरोड आकर उसने यहाँ एक नया घर बनवाया, जिसमें प्रथम तल पर ध्यान कक्ष था; और इस तरह माह फ़रवरी १९८२ में ईरोड केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। वही अभ्यासी वर्ष १९९३ में ईरोड केन्द्र का प्रथम प्रशिक्षक भी बना। जब अभ्यासियों की संख्या काफ़ी बढ़ गयी तो उसने ध्यान कक्ष को अपने घर के पिछवाड़े में एक तम्बू में स्थानान्तरित कर दिया, जहाँ पर २०० अभ्यासी बैठ सकते थे।

गुरुदेव ने ३ नवम्बर २००० में ईरोड की यात्रा की, जो पूर्व निर्धारित नहीं थी। गुरुदेव ने सत्संग कराया और उनके अल्पकालिक प्रवास के दौरान प्रत्येक अभ्यासी ने अपने दिल में ईरोड में आश्रम भूमि की आवश्यकता महसूस की। शीघ्र ही आश्रम के लिये नयी भूमि अट्टायमपलायम में ली गयी, जो राष्ट्रीय राजमार्ग ४७ पर भवानी और पेरुन्दुरई के बीच स्थित है।

२४ अक्टूबर २००१ को सात एकड़ भूमि का समिति के नाम पर पंजीकरण किया गया। इसमें से २.३८ एकड़ भूमि आश्रम के लिये रखी गयी तथा शेष भूमि अभ्यासियों के बीच विभाजित की जानी थी। ६० फ़ीट लम्बा ४० फ़ीट चौड़ा खपरैल की छत का ध्यान कक्ष दिसम्बर २००१ तक तैयार कर लिया गया, जिसमें लगभग २५० अभ्यासी बैठ सकते थे। एक पटाल की छत वाले पुराने भवन को, जो इस भूमि में खरीदने के समय से ही मौजूद था, आवश्यक सुधार के उपरान्त वर्तमान में हमारे प्रिय गुरुदेव के सुखद प्रवास हेतु मास्टर्स काटेज के रूप में उपयोग में लाया जाता है।

गुरुदेव १ अप्रैल २००२ में पंजीकरण के लिये ईरोड आये और यहाँ दो दिन रुके। उन्होंने कहा, "ईरोड आश्रम निकट के छोटे केन्द्रों के लिये धुरी का कार्य करेगा"। इसीके अनुसार निकट के केन्द्रों से सभी अभ्यासी प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को यहाँ पर एकत्र होते हैं। जब भी गुरुदेव सड़क मार्ग से तिरुप्पुर की यात्रा करते थे, वह बीच में ईरोड में अवश्य रुका करते थे। लगभग ४००० वर्ग फ़ुट के स्थायी 'रसोई सह भोजन कक्ष' का निर्माण कार्य वर्ष २०१० में प्रारम्भ किया गया था। गुरुदेव तिरुप्पुर जाते हुए १४ मई २०११ को ईरोड आये। उन्होंने नये 'रसोई सह भोजन कक्ष' का उद्घाटन किया तथा सत्संग कराया।

आश्रम में अन्य सुविधायें जैसे शौचालय खण्ड, जनरेटर कक्ष, अतिथि कक्ष, सुरक्षा कर्मचारियों का कमरा व बच्चों के खेलने का स्थान आदि भी उपलब्ध हैं। प्रत्येक रविवार ईरोड केन्द्र के करीब २०० अभ्यासी सत्संग में सम्मिलित होते हैं तथा तीन महीने में एक बार निकट के केन्द्रों यथा करुमन्डमपलयम, अराचलुर, भवानी पेरुन्दुरई, गोबी, कविन्दपदी, सत्यमंगलम तथा पल्लिपलायम के अभ्यासियों के लिये पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। यासियों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने के लिये एक नये ध्यान कक्ष के निर्माण की योजना बनायी जा रही है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.